कक्षा अवलोकन के ज़रिए शिक्षण प्रक्रिया को समझना

सुनीता

पढ़ना-लिखना एक साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं। ये न केवल साथ-साथ विकसित होती हैं बल्कि एक दूसरे के विकास में भी सहायक होती हैं। साथ ही यह भी अपेक्षित है कि बच्चे भाषा का इस्तेमाल सिर्फ़ पढ़ने-लिखने के लिए ही नहीं, बल्कि तर्क, विश्लेषण, अनुमान लगाने, भावनाओं की अभिव्यक्ति और कल्पना आदि करने के लिए भी करें।

लेख में इस बात को ऊधम सिंह नगर में ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 2 पढ़ाने वाली शिक्षिका के कक्षा अवलोकन और बातचीत के द्वारा समझने की कोशिश की गई है।

बच्चा जब विद्यालय में प्रवेश करता है तो वह अपने परिवेशीय सन्दर्भों से परिचित होता है और अपने आसपास की दुनिया को महसूस करते हुए बड़ा होता है। बच्चों के पास अपने परिवेश से जुड़े ख़ूब सारे अनुभव होते हैं और उन्हें वे बख़ूबी बयाँ भी कर पाते हैं। अगर कक्षा शिक्षण में बच्चों के अनुभवों को कक्षा में जोड़कर विस्तार दिया जाए तो बच्चे कक्षा में सक्रिय प्रतिभागिता करते हैं। यह स्वायत्तता शिक्षक के पास होती है कि वह बच्चों के अनुभवों का कक्षा में कैसे इस्तेमाल करते हैं। पर अगर पाठ्यपुस्तकों में भी ऐसे पाठ बुने गए हों जो बच्चों को उनके परिवेश से जोड़ते हों और उनके परिवेश को क़रीब से देखने और अवलोकन के मौक़े देते हों तो शिक्षण प्रक्रियाएँ सहज और प्रभावी हो जाती हैं।

कक्षा 1 व 2 की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* के प्राक्कथन में यह बात स्पष्टता से रखी गई है कि पढ़ना-लिखना एक साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं। ये न केवल साथ-साथ विकसित होती हैं बल्कि एक दूसरे के विकास में भी सहायक होती हैं। साथ ही यह भी अपेक्षित है कि बच्चे भाषा का इस्तेमाल सिर्फ़ पढ़ने-लिखने के लिए ही नहीं, बल्कि तर्क, विश्लेषण, अनुमान लगाने, भावनाओं की अभिव्यक्ति और कल्पना आदि करने के लिए भी करें।

इस बात को ऊधम सिंह नगर में ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 2 पढ़ाने वाली शिक्षिका के कक्षा अवलोकन और बातचीत के द्वारा समझने की कोशिश की गई है। इस विद्यालय के समीप घना जंगल और एक बड़ा जलाशय भी है। विद्यालय में पढ़ने वाले अधिकतर बच्चों के अभिभावक मज़दूरी, खेती-बाड़ी, मछली पालन और जंगल से लकड़ी बेचने का काम करते हैं।

कक्षा अवलोकन के दौरान शिक्षिका ने उक्त कक्षा के बच्चों के साथ पाठ्यपुस्तक के नौवें पाठ 'बुलबुल' पर काम किया। पाठ में ऐसे अवसर दिए गए हैं जहाँ बच्चे अपने परिवेश में पाए जाने वाले पक्षियों का अवलोकन कर सकें और उनके बारे में अपने अनुभव जोड़ सकें।

पहले दिन शिक्षिका ने कक्षा की शुरुआत कविता 'चिड़िया चिड़िया उड़ती जा' से की। इस कविता से कक्षा को शुरू करने का उद्देश्य यह था कि पाठ 'बुलबुल' चिड़ियों से जुड़ा पाठ है तो कविता के माध्यम से बच्चों का जुड़ाव पाठ

से बन सके। कविता के बाद शिक्षिका ने बच्चों से कहा, "अपनी-अपनी *रिमझिम* की किताब खोलो"। *रिमझिम* का नाम सुनते ही बच्चों ने कहा कि मैडम उसमें की तो लगभग सारी कहानियाँ हम ख़ुद ही पढ़ चुके हैं। शिक्षिका ने बच्चों से कहा कि आपने पढ़ी तो होंगी, पर मैं चाहती हूँ हम उसपर बातचीत करें कि आप सभी ने जो पढ़ा है उससे क्या समझा? फिर शिक्षिका ने 'बुलबुल' पाठ निकालकर बच्चों को दिखाया और बच्चों से निम्न बातचीत की–

शिक्षिका– "बुलबुल क्या होती है?"

बच्चे– "एक चिड़िया होती है।"

शिक्षिका– "चिड़िया क्या करती है?"

बच्चे– "उड़ती है।"

नवीन– "उल्लू भी उड़ता है रात को।"

शिक्षिका– "अच्छा, उल्लू रात को उड़ता है दिन में नहीं उड़ता है?"

बच्चे– "जी नहीं।"

शिक्षिका– "अच्छा, और आपने कौन-कौन सी चिड़ियाँ देखी हैं?"

बच्चे– "तोता, कबूतर, चिरैया, कोयल, मोर, चील, उल्लू।"

शिक्षिका (पाठ को पढ़ते हुए)– "क्या तुमने कभी बुलबुल देखी है? बुलबुल को पहचानने का एक सरल तरीक़ा भी है..."

शिक्षिका– "अच्छा, ये बताओ किसी ने बुलबुल को देखा है?"

एक लड़की– "जी, मेरे खेत में आती है।"

शिक्षिका– "चिड़िया की पूँछ पता है न! आप सबने देखी तो होगी। बुलबुल को पहचानने का एक आसान तरीक़ा है कि अगर उसकी पूँछ के नीचे की जगह लाल हो, सिर काला, बाक़ी का पूरा शरीर भूरा हो और वह तेज़ आवाज़ में बोलती है, तो वह बुलबुल हो सकती है।"

फिर शिक्षिका ने बच्चों से पूछा– "अगर चिड़िया की पूँछ का निचला हिस्सा लाल हो तो वह कौन-सी चिड़िया हो सकती है?" सभी बच्चों ने एक साथ कहा– "जी, बुलबुल होगी"। शिक्षिका ने बच्चों को पाठ में बने बुलबुल के चित्रों को भी दिखाया तो इसपर कुछ बच्चों ने कहा कि यह चिड़िया तो हमने देखी है, यह हमारे खेत में भी आती है। इसके बाद शिक्षिका ने बच्चों से चिड़ियों की आवाज़ पर बात की।

शिक्षिका– "अच्छा ये बताओ, चिड़िया बोलती कैसे है?"

बच्चे– "चीं-चीं, चीं-चीं।"

शिक्षिका– "तोता कैसे बोलता है?"

बच्चे– "टाऊ-टाऊ / टें-टें।"

शिक्षिका– "अच्छा, कोयल कैसे बोलती है?"

बच्चे– "कूँ-कूँ।"

बच्चों ने ख़ूब सारी चिड़ियों की आवाज़ें निकालीं। शिक्षिका ने अन्य पक्षियों के बारे में भी पूछा और बच्चों ने उनकी आवाज़ें निकालकर सुनाईं। बच्चों ने शिक्षिका से कहा कि बुलबुल की आवाज़ कैसी होती है समझ नहीं आ रहा है। फिर शिक्षिका ने बच्चों को यूट्यूब से बुलबुल की आवाज़ सुनाई और कहा कि अब तुम्हें अपने आसपास ऐसी आवाज़ सुनाई देगी तो उस चिड़िया को ध्यान से देखना।



इसके बाद शिक्षिका ने चार्ट पर कुछ पक्षियों के चित्र दिखाए और बच्चों को उनमें से बुलबुल की पहचान करने को कहा। फिर शिक्षिका ने पूछा कि तुम्हें कैसे पता चला कि ये बुलबुल का चित्र है? सभी बच्चों ने जवाब दिया कि इसकी पूँछ नीचे से लाल है, शरीर भूरा और सिर काला है। बुलबुल की पहचान के साथ ही उन्होंने कुछ अन्य पक्षियों की पहचान के बारे में बच्चों से पूछा। जैसे– कौवे की क्या पहचान होती है, तोते की क्या पहचान होती है आदि।

शिक्षिका– "मैना कैसे बोलती है? क्या आप लोगों ने कहीं मैना देखी है?"

नवीन– "मैंने खेत में देखी है।"

शिक्षिका– "जब आप स्कूल में खाना खाते हो, तब मैना और गौरैया भी आती हैं।" फिर शिक्षिका ने बच्चों को बताया कि बुलबुल को लोगों से बिलकुल डर नहीं लगता है, जैसे बाक़ी चिड़ियाँ लोगों से डर जाती हैं। जब तुम बाक़ी चिड़ियों के पास जाते हो तो वह उड़ जाती हैं।

शिक्षिका (पाठ को आगे पढ़ाते हुए)– "शायद एक बुलबुल आपको ऐसी भी दिखे जिसके सिर पर कलगी हो जैसी मोर के सिर पर होती है, उसे सिपाही बुलबुल कहते हैं। अच्छा बताओ तो, उसे सिपाही क्यों कहते होंगे? क्या तुम्हें पता है सिपाही कौन होता है?"

एक बच्चा– "जी, राजा के महल में होता है और चोर को भगाता है। और जब चोर आता है उसको पकड़ता है।" (कुछ बच्चों ने यह भी कहा कि सिपाही तो पुलिस होती है वो सबको पकड़ लेती है।)

शिक्षिका– "क्या पुलिस सबको पकड़ लेती है?"

बच्चे– "सबको तो नहीं पकड़ती है, बस जो चोर होता है उसी को पकड़ती है।"

शिक्षिका– "अच्छा तो सिपाही का काम चोर को पकड़ना है, तो सिपाही बुलबुल क्या करती होगी और इनमें कौन-सी चिड़िया चोर होगी।" (किताब दिखाते हुए)

कुछ बच्चे– "चिड़िया को लेकर जाती होगी पुलिस स्टेशन?"

शिक्षिका (मुस्कुराते हुए)– "अच्छा बताओ, चिड़िया का पुलिस स्टेशन कौन-सा होगा?"

कुछ बच्चे– "उसका घोंसला होगा।"

शिक्षिका– "घोंसले से चोर का क्या मतलब होगा?"

बच्चे– "कौवा है, वो चिड़िया का घोंसला तोड़ देता होगा और अण्डे भी फोड़ देता होगा।"

शिक्षिका– "तो क्या सिपाही बुलबुल कौवे को पकड़ती होगी?"

नवीन– "कौवा सिर पर भी चोंच मारता है।"

नीरज– "मैडमजी, शायद सिपाही बुलबुल बच्चे देती होगी।"

इसी बातचीत में नीरज ने अपना एक अनुभव रखा कि उसके घर के पास एक पेड़ था और पेड़ पर एक चिड़िया का घोंसला था और उसमें बच्चे थे तो वो गिर गए थे। अचानक सभी बच्चों ने कहा कि मैडमजी, नीरज ने उसे गिराया था और फिर नीरज की माँ ने उसकी पिटाई की थी। नीरज चुप रहा तो शिक्षिका ने इसी पर बच्चों से बात की कि अगर नीरज की माँ से कोई उसे छीनकर ले जाएगा तो उसे कैसा लगेगा? सभी का कहना था कि उसे दुःख होगा। इसपर शिक्षिका ने समझाया कि तुम्हें चिड़िया के बच्चों को वहीं छोड़ देना चाहिए था, उसकी माँ उन्हें उठाकर ले जाती। आगे से सभी बच्चे यह ध्यान रखेंगे कि वो किसी भी चिड़िया का घोंसला नहीं तोड़ेंगे, चिड़िया को भी बुरा लगता है और वह विलाप करती है। फिर उन्होंने सिपाही बुलबुल पर चर्चा आगे बढ़ाई कि घोंसले में अण्डे होते हैं, और अगर कोई भी पक्षी या कौवा घोंसले में अण्डे चुराने आएगा तो सिपाही बुलबुल फटाफट अण्डों को बचाने आ जाएगी। जैसे पुलिस चोरों से रक्षा करती है, वैसे ही सिपाही बुलबुल अण्डों की रक्षा करेगी।

फिर पाठ को आगे पढ़ते हुए शिक्षिका ने बताया कि बुलबुल पीपल और बरगद के पेड़ से कीड़े ढूँढ़कर खाती है और वह हमारी तरह फल और सब्ज़ी भी खाती है।

शिक्षिका– "हम फल और सब्ज़ी खाते हैं न?"

सभी बच्चे– "जी।"

शिक्षिका– "कौन-कौन से फल खाते हैं?"

बच्चे– "सेब, सन्तरा, अमरूद, आम, चीकू।"

शिक्षिका– "सब्ज़ी कौन-कौन सी खाते हैं?"

बच्चे– "लौकी, आलू, हरी सब्ज़ी, गोभी, बैंगन।"

शिक्षिका ने बताया कि बुलबुल को अमरूद और मटर काफ़ी पसन्द हैं, वह इनपर तेज़ी से हमला करती है। पाठ में आगे बुलबुल के घोंसले का ज़िक्र था तो शिक्षिका ने बच्चों को बताया कि बुलबुल अपना घोंसला सूखी घास और तिनके से बनाती है। बच्चों, आपने देखा होगा उसके घोंसले में घास के तिनके और छोटे पौधों की पतली जड़ें होती हैं। शिक्षिका ने श्यामपट्ट पर घोंसले का चित्र बनाते हुए बताया कि वह कटोरे की तरह घोंसला बनाती है। कुछ बच्चों ने कहा कि जब हवा बहती है तो उसका घोंसला बिगड़ जाता है। फिर उन्होंने बच्चों को बताया कि हल्की हवा से उसका घोंसला नहीं बिगड़ता, पर जब बहुत ज़ोर से आँधी चलती है तब घोंसला टूटता है। और वो भी कभी-कभी। घोंसला हवा से नहीं, आँधी से गिरता है।

यह बात सुन एक बालिका आशा ने अपना अनुभव बताया कि मेरे घर के पास पेड़ पर एक घोंसला था। जब ज़ोर से आँधी आई तो वो घोंसला टूट गया था। फिर पाठ के अन्त में शिक्षिका ने बच्चों को बताया कि बुलबुल एक बार में 2 या 3 अण्डे देती है उसके अण्डों में लाल और बैंगनी बिन्दियाँ होती हैं। अन्त में उन्होंने पाठ से सम्बन्धित कुछ सामान्य प्रश्न पूछे, जैसे– कहानी किस बारे में थी?, बुलबुल को हम कैसे पहचानेंगे? आदि। पाठ पढ़ाने और चर्चा के बाद शिक्षिका ने बच्चों को बुलबुल का चित्र बनाने और उसमें रंग भरने को कहा। सभी बच्चे चित्र बनाने में व्यस्त हो गए। मैंने देखा कि बच्चों ने चित्र बनाते समय और रंग भरते समय यह ध्यान रखा कि बुलबुल की पहचान कैसे करेंगे।



इस पूरी प्रक्रिया में बच्चे अपने अनुभवों को पाठ से जोड़ रहे थे और शिक्षिका ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि बच्चों को अपनी बात रखने के पूरे मौक़े मिल सकें।

दूसरे दिन की शुरुआत शिक्षिका ने बच्चों के साथ पिछले दिन की बातचीत से की। उन्होंने पूछा कि हमने जो पाठ पढ़ा था उसका नाम क्या था? तुम्हें याद होगा न कि किसी को सिपाही क्यों कहा जाता होगा? हम बुलबुल को कैसे पहचान सकते हैं? सिपाही बुलबुल को कैसे पहचान सकते हैं? आदि।

इसपर बच्चे कक्षा में हुई पिछले दिन की बातचीत से बुलबुल के बारे में बता पा रहे थे। इस बातचीत के बाद शिक्षिका ने बच्चों से अन्य कलगी वाले पक्षियों के बारे में बातचीत की।

शिक्षिका ने बच्चों से पूछा– "क्या तुमने कोई और पक्षी भी देखे हैं जिनके सिर पर कलगी होती है?"

सभी बच्चे एक साथ– "मोर, मुर्गा।"

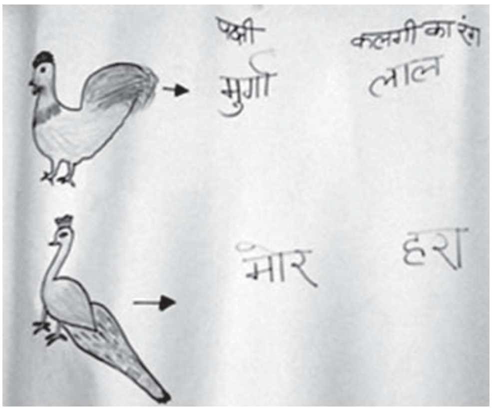
शिक्षिका– "मोर के सिर पर कैसी कलगी होती है?"

बच्चे– "हरी।"

शिक्षिका– "और मुर्गी के?"

बच्चे– "लाल।"

शिक्षिका ने शिक्षण सामग्री के उपयोग से बच्चों को एक मोर और एक मुर्गे का चित्र



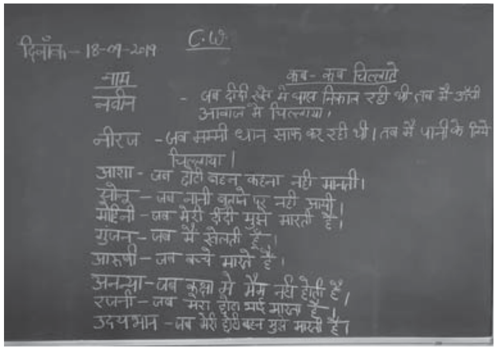
दिखाया और कहा कि देखकर बताओ यह कौन-कौन से पक्षी हैं। बच्चों ने उनके नाम और कलगी के रंग के बारे में बताया और शिक्षिका ने उनका नाम और कलगी के रंग के बारे में बच्चों के सामने ही चार्ट पर लिखा। जैसे– मोर – हरी कलगी, मुर्गा – लाल कलगी।

शिक्षिका– "अच्छा ये बताओ कि कलगी वाले कितने पक्षियों के बारे में हमें पता चला?"

सोनू– "दो (मुर्गी और मोर)।"

नवीन– "तीन, बुलबुल भी।"

इसके बाद शिक्षिका ने बात की कि बुलबुल तेज़ आवाज़ में बोलती है। क्या तुम भी तेज़ आवाज़ में बात करते हो? सभी बच्चों ने अपनी-अपनी बात बताई कि वे कब-कब तेज़ आवाज़ में बोलते हैं। शिक्षिका ने साथ-साथ उनकी बात को



श्यामपट्ट पर भी लिखा। सभी की बात लिखने के बाद उन्होंने सभी बच्चों को एक-एक कर बुलाया और अपनी-अपनी बात पढ़ने को कहा।

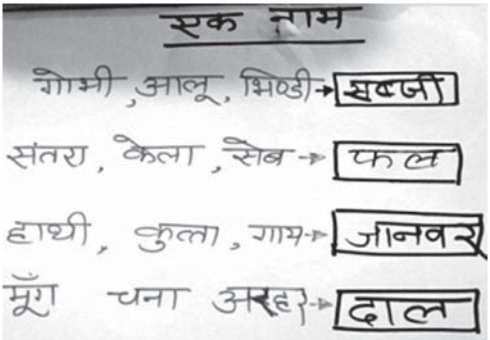
पढ़ने के बाद शिक्षिका ने बच्चों का ध्यान पाठ में दिए गए अभ्यासों की तरफ़ दिलाया और कहा कि मेरी बात ध्यान से सुनना। मैं कुछ चीज़ों के नाम लूँगी और आप सब मुझे बताना कि ये सब हैं क्या? शिक्षिका ने एक चार्ट निकालकर बच्चों से पूछा कि गोभी, आलू, भिण्डी क्या हैं? बच्चों ने उत्तर दिया, सब्ज़ी। बातचीत करते हुए उन्होंने बच्चों को कहा कि जैसे हमने कुछ चीज़ों के समूह को एक नाम दिया वैसे ही हम इन्हें भी एक नाम देंगे। तुम लोग मुझे इनके नाम बताना और मैं इन्हें चार्ट पर लिखूँगी। बच्चे जैसे-जैसे नाम बताते गए, शिक्षिका ने उन्हें चार्ट में भी बच्चों के सामने ही दर्ज किया।

फिर शिक्षिका ने बच्चों के साथ उनकी पसन्द की सब्ज़ियों पर बातचीत की और उस बातचीत को पाठ से भी जोड़ा। उन्होंने पूछा– "बुलबुल को कौन-सी सब्ज़ी पसन्द थी?"

बच्चों ने कहा– "मटर, फल और अमरूद।"

कुछ बच्चों ने हरी सब्ज़ियों के नाम भी लिए तो शिक्षिका ने उन्हें सराहा और कहा– "अरे वाह! आपको पालक और मेथी भी पसन्द है। ये तो हरी सब्ज़ियाँ हैं और सबको खानी चाहिए, इनमें आयरन होता है। अच्छा, और कौन-कौन सी हरी सब्ज़ियाँ होती हैं?"

बच्चों ने कहा– "हरा साग, पत्ता गोभी, मेथी, पालक, बथुआ, मूली के पत्ते, बंगाली साग।"



इसके बाद शिक्षिका ने कहा कि बुलबुल वाले पाठ में हमें बहुत-सी जानकारी मिली और अब मैं आपसे कुछ पूछूँगी, तुम लोग मुझे उसके बारे में बताना। शिक्षिका (चार्ट पेपर दिखाते हुए)– "इसको पढ़ो तो इसपर क्या लिखा है?"

लगभग सभी बच्चे– "बूझो तो जानें।"

शिक्षिका– "अब मैं पढ़ूँगी, सभी ध्यान से सुनना और जिस बच्चे का नाम लूँगी अब वही बोलेगा। आरुषि बताएगी, मैं काली हूँ मीठा गाना गाती हूँ।"

आरुषि– "कौवा।"

नवीन– "लड़की।"

आशा– "कोयल।"

शिक्षिका– "हरे रंग का हूँ चोंच मेरी लाल है।"

सोनाली– "तोता।"

शिक्षिका– "सूप जैसे कान हैं, मोटे-मोटे पैर हैं।"

नवीन– "चुड़ैल।"

सोनू– "हाथी।"

शिक्षिका– "घरों में आता हूँ चीज़ें कुतरता हूँ।"

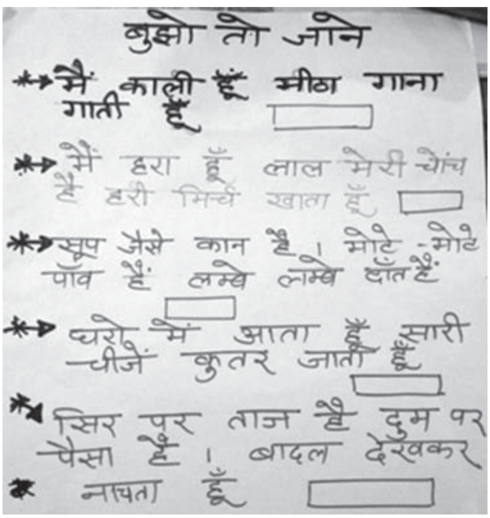
सभी बच्चे– "चूहा।"

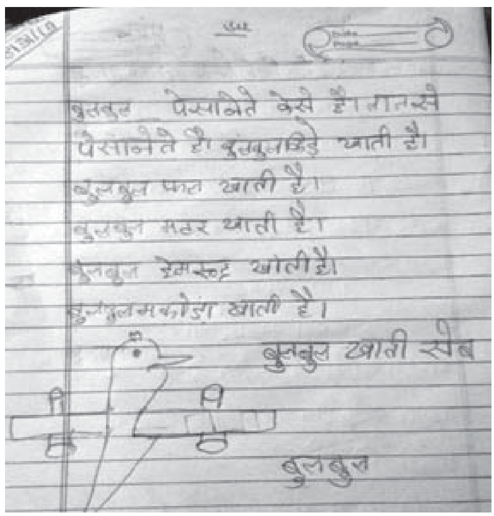
शिक्षिका– "सिर पर ताज है दुम पर पैसा और बादल देखकर नाचता हूँ।"

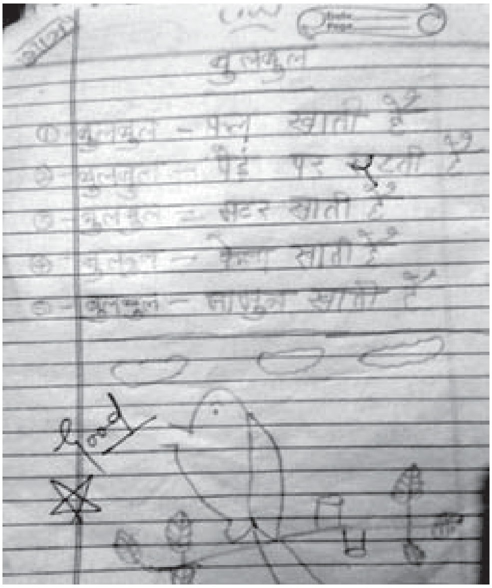
सभी बच्चे– "मोर।"

इन अभ्यासों के बाद शिक्षिका ने बच्चों को कहा कि बुलबुल के बारे में 5 लाइन में लिखो कि वो क्या-क्या करती है। कोई कविता भी बना सकता है।

कक्षा अवलोकन में देखने को मिला कि लगभग सभी बच्चों ने बुलबुल के बारे में चार-पाँच वाक्य बनाए, केवल कुछ ही बच्चे ऐसे थे जिन्होंने मात्राओं की ग़लतियाँ की थीं। शिक्षिका ने बच्चों द्वारा लिखे को जाँचने के दौरान उन्हें बताया कि क्या ग़लत लिखा हुआ था और फिर उसे सुधारा और पढ़कर सुनाया। अपनी गति से सीखने वाले जिन बच्चों ने 2-3 वाक्य लिखे, शिक्षिका ने उन्हें चित्र बनाने के लिए भी कहा।







कक्षा अवलोकन के पश्चात शिक्षिका से उनकी शिक्षण विधियों पर बातचीत हुई तो शिक्षिका ने बताया कि मैं बच्चों के साथ काम करने के दौरान यह कोशिश करती हूँ कि किसी भी पाठ को पढ़ाने से पहले बच्चों के साथ कुछ खेल गतिविधियाँ की जाएँ ताकि बच्चे कक्षा में सक्रिय प्रतिभागिता कर सकें। प्राथमिक कक्षाओं में बातचीत बच्चों को अभिव्यक्ति के मौक़े देती है और पढ़ने-लिखने में विस्तार का काम करती है।

इसीलिए बच्चों को कक्षा में अपनी बात रखने के भरपूर मौक़े देना ज़रूरी है। इससे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे पढ़ने-लिखने में रुचि लेते हैं।

कक्षा में जब बच्चों की स्वयं की बात कही गई बात को अनुमान से पढ़ने और लिखने के अवसर दिए जाते हैं तो उन्हें यह विश्वास होता है कि जो बोला जाता है उसे पढ़ा और लिखा जा सकता है और इससे बच्चों के मन में यह विश्वास भी जागृत होता है कि मैं पढ़ सकता हूँ।

जब बच्चे शुरुआत में पढ़ना-लिखना सीखते हैं तो ग़लतियाँ होना स्वाभाविक प्रक्रिया है। अगर शिक्षक उन ग़लतियों की परवाह न करके बच्चों को प्रोत्साहित करें तो बच्चों के मन से ग़लत लिखने और पढ़ने का डर निकल जाता है, किन्तु जब शिक्षक ग़लतियों पर बच्चों को टोक देते हैं तो बच्चे डर के कारण प्रयास करना ही छोड़ देते हैं।

कक्षा में जिस कहानी, कविता और चित्रों पर काम हो रहा हो, उनके पोस्टर प्रदर्शित करने और बच्चों के द्वारा किए गए कार्यों को भी कक्षा में स्थान देने से भाषा समृद्ध माहौल बनता है। लिखित टेक्स्ट के अधिक-से-अधिक उदाहरणों का शिक्षण प्रक्रियाओं में इस्तेमाल होने से उनपर बच्चों की नज़र बार-बार पड़ती है और उन्हें अनुमान से पढ़ने-लिखने में मदद होती है।

सुनीता दो दशक से भाषा शिक्षण के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में उत्तराखण्ड के ऊधम सिंह नगर में भाषा स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : sunita1@azimpremjifoundation.org